



## सवाईमाधोपुर जिले में कृषि भूमि उपयोग के बदलते प्रारूप का भौगोलिक अध्ययन

**डॉ. ओमप्रकाश कोली**

सहायक आचार्य, टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बोली, सवाईमाधोपुर

**सारांश** :मानव सभ्यता की भांति ही कृषि का इतिहास भी अत्यंत प्राचीन है। मानव द्वारा कृषि कार्यों का आरंभ संभवतः आखेट, वन्य क्रियाकलाप एवं पशुपालन कार्य के पश्चात ही किया गया। यद्यपि पशुपालन एवं कृषि दोनो ही क्रियाकलाप प्रत्ये क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के रूप में साथ-साथ संचालित होते रहे हैं। परंतु मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एवं कृषि क्षेत्र में प्रगति के फलस्वरूप कृषि कार्य प्रधान होते गए एवं पशुपालन का कार्य द्वितीयक कार्य के रूप में गिना जाने लगा। कृषि आधुनिकीकरण के फलस्वरूप एवं कृषि में दिनोदिन बढ़ते तकनीकी विकास के कारण कृषि का वर्तमान स्वरूप पूर्णतः आधुनिक एवं विकसित नजर आता है। निरंतर बढ़ती जनसंख्या एवं उसी अनुरूप खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग ने मनुष्य को भूमि का अधिकाधिक उपयोग करने का ज्ञान दिया एवं साथ ही खाद्य आपूर्ति को पूरा करने के चलते मनुष्य ने विस्तृत जंगलों का विनाश कर उन्हें कृषि क्षेत्र में परिवर्तित किया। प्रस्तुत शोध पत्र में सवाईमाधोपुर जिले में कृषि भूमि उपयोग के स्वरूप एवं समयानुरूप इसमें हुए परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

**मूल बिंदु** : भूमि उपयोग, कृषि, सिंचाई, कृषि आधुनिकीकरण

### 1. परिचय:

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो कृषि कार्यों का संचालन मनुष्य अपने जीविकोपार्जन के लिए करता था परंतु धीरे-धीरे विकास के साथ-साथ मनुष्य की आवश्यकताएं भी बढ़ती गईं एवं उसी अनुरूप मनुष्य कृषि विकास के नये-नये आयाम स्थापित करता गया। वर्तमान



आधुनिक कृषि के स्वरूप ने परंपरागत कृषि की छवि को पूर्णतया बदल दिया है। वर्तमान कृषि का स्वरूप पूर्णतया व्यापारिक हो गया है एवं कृषि ऐसा उद्यम बन गया है, जिसमें एक ही भूमि पर कम समय में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की लालसा किसानों में रहती है। विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों एवं उर्वरकों के उपयोग के कारण वर्तमान समय में भूमि उपयोग के स्वरूप में बड़ा परिवर्तन कृषि क्षेत्र में देखने को मिलता है। यद्यपि किसी भी प्रदेश के भूमि उपयोग का प्रतिरूप वहां के भौतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी कारको द्वारा तो निर्धारित होता है कि तथापि किसी भी क्षेत्र में भूमि उपयोग पर ऐतिहासिक एवं राजनितिक कारको का भी प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। सर्वाईमाधोपुर जिले में कृषि जिले की अर्थव्यवस्था का सदैव से ही प्रमुख भाग रही है। कृषि हेतु आवश्यक एवं अनुकूल दशाओं की उपलब्धताओं के कारण जिले में कृषि का स्वरूप पिछले वर्षों में निरंतर परिवर्तित हुआ है एवं जिले में कृषि क्षेत्र के अन्तर्गत तकनीकी विकास भी उच्च स्तर पर देखने को मिलता है। जिसके अन्तर्गत भूमि उपयोग प्रारूप एवं इसमें परिवर्तन तथा कृषको का कृषि आधुनिकीकरण की तरफ रुझान का स्पष्ट प्रभाव क्षेत्र में कृषि विकास पर परिलक्षित होता है।

## 2. साहित्य पुनरावलोकन :

- **सिंधवी, स्नेहलता** ने अपने शोध अध्ययन 'जल प्रबन्धन' इन्दिरा गांधी नहर क्षेत्र की जल-जमाव और मृदा लवणता की समस्याओं का एक भौगोलिक विश्लेषण में नहरी जल सिंचाई से सम्बन्धित जल जमाव व मृदा लवणता की पर्यावरणीय अवक्रमण की समस्याओं का विशद आकलन करते हुए, उनका भूमि उपयोग व इस क्षेत्र के फसल प्रतिरूप पर प्रभाव की विस्तृत तथ्यपरक, सारगर्भित व्याख्या करने का प्रयास किया है।
- **जे. टी. कॉपोक** द्वारा 1964 में न्यूनतम वर्गों की पद्धति का उपयोग करते हुए 11 फसल क्षेत्रों (प्रथम क्रम के क्षेत्र) तथा 38 फसल संयोजन क्षेत्रों का निर्धारण किया है।



- रामा प्रसाद (2002) ने टोंक जिले में कृषि भूदृश्य का परिवर्तन भूमि उपयोग प्रारूप पर लेख लिखे तथा ग्रामीण परिवेश के समुचित नियोजन हेतु सुझाव प्रस्तुत किये।
- प्रो. बी.बी. शर्मा, अक्षय शुक्ला (2011) ने “कृषि संसाधनों पर जनसंख्या दबाव के कारण पर्यावरण की समस्या” में उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले के विशेष अध्ययन द्वारा क्षेत्र में निरन्तर बढ़ी हुई जनसंख्या के कृषि भूमि उत्पादनों पर पड़ने वाले दबाव का अध्ययन किया है।
- शर्मा, टी.सी. (1999) ने अपनी पुस्तक “टेक्नोलोजिकल चेंज इन इंडियन एग्रीकल्चर” में कृषि, भूमि उपयोग से संबंधित बदलती धरातलीय विषमताओं का अध्ययन किया है, साथ ही कृषि की गहनता, भूमि उपयोग, कृषि नियोजन पर विस्तृत प्रकाश डाला है।
- सिंह, बी.आर. (1996) ने अपनी पुस्तक “रिसर्च इन ज्योग्राफी, लेण्ड यूज चेंजेज सस्टेबल” में भूमि के बदलते उपयोग एवं इसका कृषि पर प्रभाव तथा नियोजन से संबंधित विभिन्न लेखकों के लेखों का समावेश किया है।

### 3. उद्देश्य :

- सवाईमाधोपुर जिले में फसलों के क्षेत्र एवं उत्पादन का विश्लेषण करना।
- सवाईमाधोपुर जिले में बदलते कृषि भूमि प्रारूप का विश्लेषण करना
- सिंचाई सुविधाओं के फलस्वरूप जिले में कृषि क्षेत्र में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।

### 4. आंकड़ों का स्रोत :

शोध पत्र को पूरा करने हेतु विभिन्न प्रकार के द्वितीयक आंकड़ों का संग्रहण जिला कार्यालय सवाईमाधोपुर, सांख्यिकी कार्यालय, सवाईमाधोपुर, पटवार कार्यालय सवाईमाधोपुर आदि सरकारी एवं गैर-सरकारी कार्यालयों से किया गया है। इसके अलावा विभिन्न ऑनलाईन



स्त्रोंतो के माध्यम से भी इस सन्दर्भ में नवीन आंकड़ों का संग्रहण कर शोध में सहायता ली गई है।

## 5. अध्ययन क्षेत्र :

राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी भाग में स्थित सवाईमाधोपुर जिला अवस्थिति एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से राज्य के समस्त 33 जिलों में अपना महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट स्थान रखता है। अवस्थिति की दृष्टि से यह जिला 25 डिग्री 58 मिनट उत्तरी अक्षांश से 27 डिग्री 83 मिनट उत्तरी अक्षांश एवं 75 डिग्री 53 मिनट से 78 डिग्री 17 मिनट पूर्वी देशांतरों के मध्य स्थित है। मानक समुद्र तल से जिले की ऊंचाई 100 मीटर है तथा जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4498 वर्ग किलोमीटर है। सवाई माधोपुर जिला उत्तर दिशा में भरतपुर, धौलपुर एवं दौसा जिले द्वारा, उत्तर पूर्व में करौली जिले द्वारा उत्तर पश्चिम में जयपुर जिले द्वारा, दक्षिण पूर्व में कोटा जिले द्वारा, दक्षिण में बूंदी जिले द्वारा तथा पश्चिम में टोंक जिले द्वारा सीमांकित है। प्रशासनिक दृष्टि से सवाई माधोपुर जिला सात तहसीलों सवाई माधोपुर, चौथ का बखाड़ा, खण्डार, मलारनाडूंगर, गंगापूर, बौली, एवं बामनवास में विभाजित है। रणथमबोर राष्ट्रीय उद्यान होने के कारण यह जिला विश्व प्रसिद्ध है। जिले में कुछ हिस्से में मैदानी एवं कुछ क्षेत्र में पहाड़ी भाग का विस्तार पाया जाता है।

जिले में ग्रीष्म ऋतु में अधिकतम औसत तापमान 48 डिग्री तक रहता है जबकि शीत ऋतु में जिले में न्यूनतम औसत तापमान 4 डिग्री तक रहता है। जिले में वर्षा का वार्षिक औसत 72 से.मी. तक रहता है। वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 1335551 थी जिसमें से पुरुषों एवं स्त्रियों की जनसंख्या क्रमशः 704031 एवं 631520 थी। जिले में वर्ष 2011 के आंकड़ों के अनुसार 1069084 ग्रामीण जनसंख्या एवं 266467 नगरीय जनसंख्या थी जबकि जिले में जनसंख्या का घनत्व 265 पाया गया है एवं लिंगानुपात 897 पाया गया है।

## 6. जिले में भूमि उपयोग :



सवाईमाधोपुर जिले में वर्ष 2015 से 2020 के मध्य भूमि उपयोग के वितरण प्रारूप का विश्लेषण निम्न तालिकाओं में किया गया है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल वर्ष 2019–20 के प्राप्त सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार 497497 हैक्टेयर था। इसी के अलावा जिले में वर्ष 2015–16 में जंगलात के अन्तर्गत क्षेत्रफल 80153 हैक्टेयर था, जो कि वर्ष 2019–20 में बढ़कर 82495 हैक्टेयर हो गया।

तालिका संख्या 01 : सवाईमाधोपुर जिले में भूमि उपयोग प्रारूप (हैक्टेयर)

वर्ष	कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (ग्राम पत्रों के अनुसार)	जंगलात	कृषि अयोग्य भूमि		
			भूमि जो कृषि के अतिरिक्त काम में ली गई	ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि	योग
2015–16	497497	80153	28467	38948	64415
2016–17	497145	79288	41660	25817	67477
2017–18	497145	80947	28794	36914	65708
2018–19	497145	81605	28995	35707	64702
2019–20	497143	82495	30257	33975	63932

स्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा, सवाईमाधोपुर-2020

### कृषि अयोग्य भूमि :

सवाईमाधोपुर जिले में कृषि अयोग्य भूमि के आंकड़ों पर दृष्टि डालें तो उपरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जिले में वर्ष 2015–16 में कृषि अयोग्य भूमि का कुल क्षेत्रफल 64415 हैक्टेयर पाया गया था, जिसमें ऐसी भूमि जो कृषि के अतिरिक्त कार्यों में काम में ली गई, का क्षेत्रफल 28467 हैक्टेयर था जबकि ऊसर भूमि का क्षेत्रफल इस वर्ष 38948 हैक्टेयर था। इसी प्रकार जिले में वर्ष 2016–17 में कृषि अयोग्य भूमि का कुल क्षेत्रफल 67477 हैक्टेयर था, जो की वर्ष 2017–18 में घटकर 65708 हैक्टेयर पाया गया था। वर्ष 2019–20 के मध्य जिले में कृषि अयोग्य भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल वर्ष 2016–17 में ही पाया गया है। वर्ष 2019–20 में जिले में कृषि अयोग्य भूमि के क्षेत्रफल में कमी देखने को



मिलती है। इस वर्ष जिले में कृषि अयोग्य भूमि का कुल क्षेत्रफल 63932 हैक्टेयर था जिसमें से कृषि के अतिरिक्त कार्यों में काम ली गई भूमि का क्षेत्रफल 30257 हैक्टेयर जबकि कृषि अयोग्य भूमि का क्षेत्रफल 33975 हैक्टेयर पाया गया।

### जोत रहित भूमि :

सवाईमाधोपुर जिले में जोत रहित भूमि के अन्तर्गत भूमि को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है, जिनका विस्तृत वर्णन निम्न प्रकार है।

### स्थायी चारागाह तथा अन्य गौचर भूमि :

सवाईमाधोपुर जिले में वर्ष 2015–16 से वर्ष 2019–20 तक के दौरान स्थायी चारागाह तथा अन्य गौचर भूमि के अन्तर्गत क्षेत्रफल को निम्न तालिका में दर्शाया गया है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जिले में वर्ष 2015–16 में स्थायी चारागाह तथा अन्य गौचर भूमि के अन्तर्गत भूमि का क्षेत्रफल 24555 हैक्टेयर पाया गया है। जबकि जिले में वर्ष 2016–17 में इसके क्षेत्रफल में मामूली कमी देखने को मिली है। इस वर्ष जिले में इस भूमि का क्षेत्रफल 24485 हैक्टेयर पाया गया है। इसी प्रकार जिले में स्थायी चारागाह तथा अन्य गौचर भूमि का क्षेत्रफल वर्ष 2017–18 में 24762 हैक्टेयर तथा वर्ष 2018–19 में 25924 हैक्टेयर पाया गया है एवं जिले में यह क्षेत्रफल वर्ष 2019–20 में 25996 हैक्टेयर पाया गया है।

### वृक्षों के झुंड तथा बाग :

सवाईमाधोपुर जिले में वृक्षों के झुंडों तथा बाग के अन्तर्गत क्षेत्रफल को देखें तो तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जिले में वर्ष 2015–16 में यह क्षेत्रफल 640 था जो कि आगे के वर्षों में निरंतर बढ़ा है। वर्ष 2016–17 में जिले में यह क्षेत्रफल 796 हैक्टेयर पाया गया



था। जबकि वर्ष 2017–18 में यह 916 हैक्टेयर पाया गया है एवं वर्ष 2019–20 में जिले में वृक्षों के झुंड तथा बाग के अन्तर्गत क्षेत्रफल 1212 हैक्टेयर पाया गया है।

तालिका संख्या 02 : सवाईमाधोपुर जिले में भूमि उपयोग प्रारूप (हैक्टेयर)

वर्ष	जोत रहित भूमि (पड़त भूमि के अतिरिक्त)			पड़त भूमि	
	स्थाई चारागाह तथा अन्य गोचर भूमि	वृक्षों के झुंड तथा बाग	बंजर (कृषि योग्य भूमि)	अन्य पड़त भूमि	चालू पड़त भूमि
2015–16	24555	640	11664	14535	11949
2016–17	24485	796	11281	12436	10761
2017–18	24762	916	10842	13463	11831
2018–19	25924	997	10177	12126	9612
2019–20	25996	1212	10648	11769	9002

स्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा, सवाईमाधोपुर-2020

### बंजर भूमि :

सवाई माधोपुर जिले में बंजर भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल का आंकलन करने पर ज्ञात होता है की जिले में बंजर भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल वर्ष 2015–16 से वर्ष 2019–20 के मध्य कोई विशेष परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है। आंकड़ों से ज्ञात होता है की वर्ष 2015–16 में जिले में बंजर भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल 11664 हेक्टेयर पाया गया था एवं जिले में वर्ष 2016–17 में यह क्षेत्रफल 11281 हेक्टेयर पाया गया है। इसी प्रकार सवाई माधोपुर जिले में वर्ष 2017–18 एवं वर्ष 2018–19 में बंजर भूमि के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल क्रमशः 10842 एवं 10117 हेक्टेयर पाया गया है जो की पिछले वर्षों की तुलना में कम हुआ है। इसी प्रकार जिले में वर्ष 2019–20 में बंजर भूमि के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल 10668 हेक्टेयर पाया गया है। इस प्रकार यह ज्ञात होता है की जिले में बंजर भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल में गिरावट आई है।

### पड़त भूमि :



पड़त भूमि के अन्तर्गत भूमि के उस प्रकार को शामिल किया जाता है जिसकी उपजाऊ शक्ति लगातार फसले बोने से घट जाती है तथा मृदा का उपजाऊपन कम अर्थात् उदासीन हो जाता है। किसान अपनी जोत की भूमि में इस प्रकार की कम उपजाऊ भूमि को कुछ समय के लिए एक वर्ष या एक फसल चक्र के लिए खाली छोड़ देता है। इस प्रकार पड़त भूमि का लम्बे समय तक कृषि उपयोग नहीं होने से बंजर भूमि में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रकार की भूमि की जुताई व उर्वरकों द्वारा मृदा का उपजाऊपन बढ़ाकर कृषि पैदावार बढ़ाई जा सकती है तथा कुछ समय बाद उस पर पुनः कृषि की जाती है। पड़त भूमि के अन्तर्गत भूमि को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है। जो की निम्न है—

1. चालू पड़त भूमि
2. अन्य पड़त भूमि

#### अन्य पड़त भूमि :

सवाई माधोपुर जिले में अन्य पड़त भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है की जिले में अन्य पड़त भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल में निरंतर गिरावट देखने को मिलती है। जिले में वर्ष 2015–16 में अन्य पड़त भूमि का कुल क्षेत्रफल 14535 हेक्टेयर पाया गया था जो की वर्ष 2019–20 में घटकर 11769 हेक्टेयर हो गया। जिले में अन्य पड़त भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल में कमी आने का प्रमुख कारण कृषि क्षेत्र में विकास होना है। इसी प्रकार जिले में वर्ष 2016–17 में अन्य पड़त भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल 12436 हेक्टेयर पाया गया था जिसमें अगले वर्ष मामूली वृद्धि दर्ज की गयी थी वर्ष 2017–18 में जिले में यह क्षेत्रफल 13463 हेक्टेयर पाया गया था एवं जिले में वर्ष 2018–19 में अन्य पड़त भूमि का क्षेत्रफल 12126 हेक्टेयर पाया गया था।

#### चालू पड़त भूमि :

सवाई माधोपुर जिले में चालू पड़त भूमि के क्षेत्रफल पर दृष्टि डालें तो प्राप्त आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है की जिले में वर्ष 2015–16 से वर्ष 2019–20 के मध्य में जिले में चालू पड़त भूमि के क्षेत्रफल में तुलनात्मक रूप से गिरावट देखने को मिलती है। जिले में





वर्ष 2015–16 में चालू पड़त भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल 11949 हेक्टेयर पाया गया था जो की अगले ही वर्ष घटकर 10761 हो गया था। इसी प्रकार जिले में वर्ष 2017–18 में यह क्षेत्रफल पुनः बढ़ा। इस वर्ष सवाई माधोपुर जिले में चालू पड़त भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल 11831 हेक्टेयर पाया गया था परंतु जिले में वर्ष 2018–19 एवं 2019–20 में इस भूमि के क्षेत्रफल में गिरावट देखने को मिली है। वर्ष 2018–19 एवं 2019–20 में चालू पड़त भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल क्रमशः 9212 एवं 9002 हेक्टेयर पाया गया है जो की वर्ष 2015–16 से 2019–20 तक का सबसे कम था।

## 7. निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है की सवाई माधोपुर जिले में वर्ष 2015–16 से वर्ष 2019–20 के मध्य कृषि क्षेत्र के अंतर्गत भूमि उपयोग के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलता है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है की जिले में कृषि अयोग्य एवं बंजर भूमि के अंतर्गत कक्षेत्रफल में निरंतर गिरावट आई है जबकि जिले में कृषि के अंतर्गत उपयोग आने वाली भूमि के क्षेत्रफल में निरंतर वृद्धि हुई है। जिले में कृषि आधुनिकीकरण के प्रति कृषकों का रुझान बढ़ा है जो की जिले में कृषि विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है।

## REFERENCES

1. Bharadwaj, O.P. (1961). The arid zone of India and Pa- kistan. In, A History of Land Use in Arid Re-gions (Ed., L. Dudley Stamp), pp. 143-174. UNESCO, Paris.
2. District Statistical Handbook, Sawai Madhopur, 2015, 2020
3. Chouhan D.S. Studies in the utilization of Agricultural Land. Ist: Pd (1966) P-48
4. Dantwala, M.L. & Shah, C.H. (1971) Evaluation of Land Reforms (Central Report) Deptt. of Economics, University of Bombay. P-16
5. Datya, V.S. : Diddee. Jayamala & Gaikwad, G.D. (1983) Process of hand fragmentation and Effects of Land consollidation on cropping and productivity: A case study of village Nirgudi Pune Dietrict, Annals of the national Associatious of India. Vol. 111 No.1, P-12
6. Francklin, W. (1805). Military Memoirs of Mr. George Thomas. John Stockdale, London (reprint), 392p.
7. Haynes, E. S. (1999). Land use, natural resources and the Rajput state, 1780-1980. In, Desert, Droughtand Development (Eds., Rakseh Hooja and Rajendra Joshi), pp.53-119. Rawat Publications, Jaipur.



8. Jetske A, Bauma and Christopher A. Scott (2006) : “The possibilities for dry land crop yield improvement in India’s Semi arid regions observations from the field” International water management institute Colombo, Sri Lanka CA Case Study 3.
9. Jodha, N. S. (1972): “A Strategy for Dry Land Agriculture”, Economic and Political Weekly, Vol. 7, No. 13 (Mar. 25,), pp. A2-A18.
10. Lakshmi kant sharma S. (1197) : Sustainability of Dry Land Agriculture in India : A case study of Watershed Development Approach” page 117.
11. Ranvir Kumar (2000) “Reclamation of water logged and saline lands through Drainage” in management of water logging problem in Haryana (ed. Dhindwal, A.S. Kuhad, M.S. Vinod Kumar and Suhag L.S.) CCS Haryana Agricultural University Hisar.
12. Stamp. L.D. (1956): The land of Britan, its use and misure hongman Grean & Co. Ltd. London P-426